

सू

८७ अष्टमी नवमी पूजाविधि
स्तोत्रे

ASHA ARCHIVES

अष्टमी नवमी ASHA ARCHIVES	3143	
------------------------------	------	--

ॐ अं कौं कां किं नी ॥ ॐ अं सां सदि नी ॥ ॐ अं
हौं हा किं नी ॥ वलि ॥ अरु ना दि स्व स्व म
डा ॥ कृ नि म धा नि नी पूजा ॥ ॥ नमः ४ सि
दित ली पूजा न ॥ न्या मः ४ ॥ ॐ अं ॐं जी हू द
या यन म ॥ ॐ अं हूं हौं हिन प स्वा हा ॥ ॐ अं हूं
नि मा ये थो षट् ॥ ॐ अं हूं क व वा य हूं ॥ ॐ अं

ऊं न गु गु या य व षट् ॥ ॐ अं न मः ४ अ म्मा य रु
॥ थ ग क रा हूं न्या मः ॥ ॥ अ म न न ॥ ॐ अं अं
ध मा दि ८ ॥ ॐ अं म हा य गा य न या य ॥ धा न
॥ ॐ अं हूं म हा ग यो म यि ल ल्मी प्र चि म्म का द्या
य न य रु ॥ यं य व क्ता द हा गु जा रि यं च न यः
ने र्गु ना ॥ स्व न व क्ता म हा द वी म हा य गा

यात्र सिंगी । माणका छक म (धनु) सिद्धिः
याणि नियुजिता ॥ सो म्या गज यर विन सा
धक का समासु ना । दैवि ना स्या ल ली दानर
को लाय य कान उ म न ॥ उक्ता सा का स यः
(गन) चालय कुल य व र्ग । क वि क य क वि
दृष्ट क वि सै रु न न व लान् ॥ क वि सृष्ट
ॐ

क वि त्या ला स्व न नु का य व र्ग म । (धम) ना
सा रात्र ले या का उत्र (ग) नु वि सृ वि ता ॥
या धम क वा ध ना द यी व न दो रा य या गिनी
। स य रु स ध न ख न् ॥ ला य का रा का न
क ॥ वा म ख वा न् म य य द दि (ग) न् ल
मू र्ग म । अ य न क द न नो डी क न जा धा न

पुनिर्ग ॥ सद्यः सकलं सर्वं मनुष्यं विन
मनुष्यं वा मनुष्यं लब्धं दिव्यं महाप्रलययुदी
यकं ॥ अथ यत्पुत्रं विना देवी न नाना गयु
दहात्म ॥ अकाशान्तरं दत्तं दिव्यकायय
वस्तिना ॥ यत्पुत्रं विना महादेवी सिद्धि लः
क्षीयैते यदा ॥ अथ नयस्य ॥ अथा ॥ लिम्ब

लमनु ॥ ॐ नमः सर्वसिद्धि यागिनीया
नमः सर्वसिद्धि मातु र्यानमा निर्यादिना
नन्दनदिनाये सकलक लयक नायिकाः
यैरु गवये च पुकाया हि न्यै न द्य थ ॥ ५
६ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः ॥ २ ॥ ॐ
यत्र मरु सि नि निर्वाणमा न्नयु द विष मा

प्रवयुषमनि सकल इति नात्रिष्टुक् षाद
मनि सद्योपदां शाधितरलि सकल षाकुयु
मथनिद विज्जा गच्छ २ रु स २ व गर्ज २ नत्र
वृषिनालु रुद्रु निमम स्य षाकु मद्य २ रवा
हि २ ति षुलन रिन्द २ चिन्धि २ रवद्म नना
उय २ च्छद य २ नावाद्या वत्सम सकलम

नात्राथान सा भय २ यत्रमकात्र छिक
रु गवती मद्यो रौत्रव नूय कात्रिणि रिद षा
वत्रन मिग सकलम नु मात ४ यु ध गजन
वत्सलद विमहाकालि कालना षिनि द्वां ३
य सीद मदनारु ली कर २ सूत्रा सूत्रक न्यः
कां जी षी द्वां रुद्र ३ स्वाहा ॥ २२० ॥ ॥ अर

वाहनादिया निमडा ॥ नुर्ववर्लि ॥ ॥ न
नः यनिवात्र युजा ॥ नुंअखुं अमोय याय ॥
नुंअखुं अमवखेया ॥ नुंअखुं अमोया ॥ न
अखुं व अमोया ॥ नुंअखुं नविपुलायेया
॥ नुंअखुं विनाजयेया ॥ नुंअखुं काधमो
या ॥ नुंअखुं वकि नोया ॥ नुंअखुं संकव

लेया ॥ नुंअखुं कनकि नोया ॥ नुंअखुं
वजि नोया ॥ नुंअखुं खदि नोया ॥ नुंअखुं
ललिहाय नोया ॥ नुंअखुं मारु नोया ॥
वलि ॥ ॥ नुंअखुं कौकौकुं कुं ४ कुं गुयाला
ययाय ॥ नुंअखुं कौकुं कुं लयुगवदुकना
अयया ॥ नुंअखुं नौनौ नौनौ ४ कुं लन १०

[illegible]

गणकलहायुजा ॥ न्यासः ॥ ॐ शं सद्गुरु दया य
नमः ॥ ॐ स्वादि बरुङ्ग न्यासः ॥ ॐ अ आः
क्षनादि ८ ॥ ॐ वृषासनाय या ॥ ॐ अ सिः
रासनाय या ॥ क्षान् ॥ ॐ अ चं युक्ता हि सुरा
ने उच्यते कृतं (हायनः) ॥ अकास्यान्ना
चनीलीलि विष्णुद्वोरुत्तरामध ॥ उत्तंग

सामहं लक्ष्मी स्वताम्ना लायनगया मृत्यु
जय समालोका वरदा तयर्षि स्वधा द्विधा
शकल (ह) न्द संवृत्ता, हूल्लाह हाकि वधू स
४। नाना रत्रय सोराभा, कात्रक यूत्र मणिग
४॥ चतुश्चा त्मा च संयुक्ता, सत्कि नायत्र म
व्यनो ॥ ध्यान प्रथम ॥ जय श्री ली ॥ नैजं ज

ध्यात्र ॥ नैजं हं र कलवृद्ध महास न सं माह
न सकल मनु देवता कला न त्वाधियमय
वद्ध विष्णु वृद्धात्मन आत्म विद्या विव न त्वा
धिय हं र आनन्द हाकि र वानन्द वीराः
धियमयः सै र ह्री संयुक्ता कल हाय यायू ॥
नैजं नैजं सः ४ अ मृती ध्वन र द्वात्र काय महा

जें ३३

लक्ष्मी हाकि सरिगायथाय ॥ वलि ॥ ॥
उ गुच लाया मूलन ॥ रुड च ला दि ॥ अ
आं रुड च ला ये ॥ ८ ॥ म्मां योडे दि ८ ॥ जें ३३
वृद्धा म्मा दि ८ ॥ जें ३३ अं वृ आं अलि नां नम दि
॥ जें ३३ लूं रुड दि १० ॥ आदि ह्या दि १० ॥ य न्मि य
दा दि १५ ॥ अं वि न्या दि ॥ वि लं रु दि ॥ म

या दि १२ ॥ अं अ लु मा दि ॥ (मन मा दि ॥ अ
न ना दि ॥ जें ३३ वृद्ध (ला या ॥ वि लु व या ॥ रुड
य या ॥ ली अत्राय या ॥ सदा निवाय या ॥
अ मृ नी न्म य या ॥ गं न्म दि ॥ उं न्म नि क
ला ये या ॥ उं वि द्या क ला ये या ॥ उं य नि क
क ला ये या ॥ य ३३ ५ ॥ आ वा रु ना दि (ध न्

नं

मूडा ॥ ॐ त्रिकलहमर्चन ॥ ॥ त मर्कट
युजा ॥ न्यास ४ ॥ ॐ अ वां हु द या दि व उं ग ॥
ॐ अ आ धा रा स ना य क म ला स ना य या य ॥
ॐ अ य त म स्या मि नी ति ॥ ग म य ति ॥ ॐ आ न
द ह व रा य वि श्व रु ॥ कृ ष्ण ह म य ॥ वृ ष्ण ह म य
॥ ॐ कृ ष्ण ह म य ॥ नि र सु त र ती वि श्व या द ह म य

उ य न (ह म ध य न ॥ ॥ आ स न ॥ ॐ अ आ
धा रा दि ६ ॥ ॐ अ ॐ का रा स ना य या ॥ धा न
॥ ॐ अ ला क्श न म नि रा द वी प य रा ग स म य रा
। सर्व र त्त वि वि ग मी न्य वि का र न वि ग र ॥ ॐ
खा द ह म उ जा द वी ना ना य रु त्र (ह म य ना ना मा त्र
स ध री द वी ॐ ला क्श ना न्य वि श्व न ॥ स्व म य

ॐ कं हं स वा कया ल क लि हा धर्जं । तथामं व न
थमं ॐ न व म नु व ल य दं ॥ रु ठ कं ध नं या हां य
ख द्वा ह हा क म लु ल ॥ हल म इ त व नं व हा म
लि चारु न क न ॥ म गु लं व य चि त्या गु न दी रु
ता वि म र्थि ता । य म की या न का स वा या म ता म
न का रु वा ॥ ध्यान यू र्ण ॥ उ या ऊ लि ॥ जं जं जं

जं डं जं डं ४ य स्तु त र २ हू त्या दि ॥ जं जं स र र न
वा न न्द वी रा धि य त य हं २ म दा वि द्या रा अ ह्य
नी जं क ल कं रा य या यू ॥ जं जं नू लू यू मू नू व
र ॥ अ धा न वे ड व नी हा ॥ उ य य गु या मू ल वि द्य र
॥ न ड य गु दि ॥ ज या दि ॥ व द्वा र्मा दि ॥ रु द या दि
या नि म डा ॥ व र्णि ॥ हं मि हा कि क ल स य जा ॥

॥ नमो महाकाल वलियुगा ॥ न्या सः ॥ नैज
मोहदयादि ॥ नैज आधनादि ॥ नैज महायुगा
सनमा ॥ ध्यान ॥ नैज महायुगा समावृत्ते क
व्यवर्त्तुं सगजसं । चकार्य गिलावनं श्रीमं व
वनाद्यहिनान्दृष्टं ॥ विंशत्येकं शुचिं गकं मला
काय महादयं ॥ व्याघ्रचर्मयत्री धना सिं हवः

भोरुनीयकं ॥ तत्र सूर्यास्तुलं कालं नूयनादि
विह्वल्य । खड्ग रुठक यागं च विन्दु खट्वागः
दिलुमं ॥ विशूक्तानि मलान्कजं कवधालागुरु
विकं । एवं ध्यात्वा महाकालं ते तव नुवनं ह्यः
नै ॥ ध्यानं यथै ॥ यथा ॥ लिं ॥ नैज रेवुं रुं नैज
नडनोड महाकालकरुत्का न ध्यानं सलान

माना नूय धन युक्तु यिः भवतु नवगाल धन नः
कसमं रक्त दिगम्वर महाकाय रिनीति न सम
युक्तु मूलु माला धन गोड काय खडा इ धन कः
रक्त नरु महा गोड सुता मां सव सायि यं । गृह
श्वलि सर्वा मलि रु लु व सोय नं गन्ध यथा
दि सहिता मयारु क्ता निथा डि नाय त्रिवा न स

दिना थथ कम स्ववलदा मम स्यादा कूँ ३॥ ॥
नं जकै र्वै गं दं दं य र्वै यी थधिकान रुकु क मरु
रै नवाय मरु भ भ ना प्रिय नय स्व हा कि सहि
ताय सां भय स हा नय निवा राय नं दी मय वः
य ध य दी य य जा य (थय मी न व लि गृह २ म
म हा रु म र्द २ सर्वा थ सिद्धि मय य क स्यादा ॥ १
॥ नं यं यं जं नं जं आ नय यी थधिकान रि य

[illegible]

ॐ ॥ जंज यंत्र लं व वायू यी भधिकार कयाली ॥
महाराज त्रवाय मरु ॥ १ ॥ भनाधि वनय ॥ ७ ॥ जं
ॐ ॥ वं सें दं उरु त्रयी भधिकार जकयाद महाराज
त्रवाय मरु ॥ १ ॥ भनाधि वनय ॥ १ ॥ जंज दं
ॐ ॥ भनयी भधिकार राम रूप महाराज त्रवाय
मरु ॥ १ ॥ भनाधि वनय ॥ ८ ॥ जंज भू ॥ १ ॥

वी ॥ धिकात्र शीमत्रूयमहालेत्रवायमहाहम
हानाधियमय ॥ २ ॥ जें अडुंडुईवी ॥ धिकात्र
अयलमहालेत्रवायमहाहमहानाधियमय ॥ १०
॥ खडमडा ॥ वलि ॥ ०० निमहाकालवलिपुजा
॥ ॥ गणेशकृष्णवलिपुजा ॥ न्यास ॥ जें अडुंडुईवी
यादि ॥ ७ ॥ जें आध्यानादि ॥ जें अत्रासनया ॥ ८ ॥

नं ॥ जें मलुमालाधरंयव, खड खडा, कायक
उग्रनृयंमहादेव, रुठककल (॥ १॥ लि ॥ वि
यत्काहिसमयुक्तं तिनं नोद नृयिकं कृष्ण
लमदंयव, सर्वगुस्मानवासिनं ॥ ध्यानयव्य ॥
जय ॥ लि ॥ जें अडुंडुईवी, कृष्णयालय ०० दंम
यायव्यधूयदीयपुजाये ॥ ध्यानयव्य वलि ॥ ८ ॥

[illegible]

लिं ग्ट्रु २ स्वाहा ॥ १ ॥ जिं ऊ कैं रें ङँ द्यं दं व
रुद्र गायत्रे नृ रे नवायक माह व्यती हा कि सदि
गाय मालवुद्राय (गर्भ य ब्रियत् ॥ २ ॥ जिं ऊ ये च
ऊं मेँ ञ् काल दे गायत्र पु रे नवाये को मारी हा कि स
हि गाय वठ वृदाय नि ॥ ३ ॥ जिं ऊ टं ठं डं टं लं अं रुद्रा
सद्ग गायका धरे नवाय वेष्म वी हा कि सहि गायक

२६

दम्ब वृक्षाय ॥ ४ ॥ जें अ नै थें दै धनं ज य नी दू गाय
उन्नरु रें व वाय न वा रा की हा कि स हि नाय निम्ब वृः
काय ॥ ५ ॥ जें अ यें दं व रं मं व त्रि उ द गाय क या
ल रें व वाय यं ० न्द्राय सी हा कि स हि नाय क रं ज
वृक्षाय ॥ ६ ॥ जें अ यं रं ल वं काम क द गाय सी
ब रं रें व वाय यं त्राम पु हा कि स हि नाय उ र ह व रं

वृक्षाय ॥ ७ ॥ जें अ हां वं स रं द वि काय दू गायः
सं दान रें व वाय हां म राल ल्हा हा कि स हि नाय प्र
द वृक्षाय ॥ ८ ॥ द पु मू डा ॥ व लिं ॥ ० नि दू उ वः
लिं ॥ ॥ ग रं वाम पु व लि यू ज नं ॥ या स ॥ वां
ह द या दि ॥ जें अ आ ध वा दि ॥ जें अ य ग स म या ॥ ०
नं ॥ जें अ धा त र द या व त्रो डा च व पु दू यी नि व लि पु का

उद्धाकनालवदना. य न स्या यत्रि संस्तिना ॥ त्रिस्मा^०
सकालनाशीव. म. उमा ला विरु धिना ॥ खरु रुठध
नीदवी. उ म न स्र बा स्र धा रि धी ॥ क र्ति का या ल रु मा
व. विन्द्या सु ध ना न था ॥ व र्च ना यि गु के ह म य. यि न
गु र्पि न ला य नी ॥ स र्वा रा त र ल ह र्षा नी. हा उ रा त र. व
ह र्षि ना ॥ उ र्ध्व क ण वि नू यि व. चा म. उ य र म ह्य नी.

॥ धनयस्य ॥ यथा अलि ॥ जं क कुं धा सि धि र्य
म. पु व लिं ग ट द्र र स्वा दा ॥ जं क न डी डा ठि
या न जा लां ध र य नु मि त्रि का म दू य यी भ य व लिं ग ट द्र
स्वा दा ॥ उ ग य पु म ह ल वि धा ॥ नू द य पु दि ८ ॥ ज या
दि ८ ॥ व क्का म्भ दि ८ ॥ व लिं ॥ या नि म्भ डा ॥ व व सा
रि या नि नी ॥ व लि वि य ॥ य जं मा न स्य अ लि रु लु क.

नरकदायक । कर्वधनयक । वृत्तिवामुत्तमार्ज ।
जुंज न नन्दिनया ॥ जुंज ममदाका लायेया ॥ वलि
॥ जुंज कौं कौं कुं कुं ॥ रुग्णया लायेया ॥ वलि ॥
नः सनादायक न ॥ जुंज इग्नाहायकाल खदसाद
यं कुं ॥ वलि ॥ आरु रुलि ॥ जुंज रुद्रिद घाय मदाः
वग्नय सका न्वाधिययया ॥ अका ॥ जुंज यूउ

इलाउ ॥ ॥ जुंज धनु इग्नाय यत्र से न्यमात्र नायया ॥ वलि ॥
लीकाय यथाय नायया ॥ वलि ॥ रुग्ण ॥ जुंज द
अय मराय निद्यतू वि (सर्व इव निवात्र नायय
॥ वलि ॥ लीवला ॥ जुंज विद्राधियनय धज वादना
ययत्र से नारुं ज नायया ॥ वलि ॥ विद्रावा गधजा ॥
जुंज इन्द्र विद्राग्नाय यत्र से न्य दय कं य नायया
॥ वलि ॥ शिव ॥ ॥ जुंज कांठा इग्नाय यत्र से न्य विः

[illegible]

नंजुं नंजुं मरुताक नवीन नमः नमः नाभियनयवलिः
 नृक २ स्यादा ॥ उगुव पुमलन ॥ सिद्धि वाम ॥
 नंजुं नंजुं मरुताक नवीन नमः नमः नाभियनयवलिः
 नृक २ स्यादा ॥ उगुव पुमलन ॥ सिद्धि वाम ॥
 नंजुं नंजुं मरुताक नवीन नमः नमः नाभियनयवलिः
 नृक २ स्यादा ॥ उगुव पुमलन ॥ सिद्धि वाम ॥

वर्लिं ॥ मळावर्लिं ॥ यजमानन अविच्छिन्नमलि
 ॥ नर्वर्लिं कानयन ॥ कवचन ॥ नर्वर्लिं कवचुर्कः
 कामनूयति ॥ वल्लेनादिध्वयदीयजायकाल ॥
 यानउद्येदाहनयायादानिर्ह्यं वरु २ यावि (गव २
 याव ३ न ॥ वरुवद् गवया ॥ रुगवति स गवसी सु
 लिहिया ॥ कात्यायनीवृवध्यरीया ॥ सिद्धिलक्ष्मी

या कृत्तिकाया कलहाया कंठया मरुका लक्ष्म
 णचामुखाया मालकोर्मि स्मारायाय ॥ कवच ॥ ज
 मला कीलक वनाहयनाथ त्रदस्य सैकल्य ॥
 या ० याय ॥ मरुमाया मनुमाया माया ॥ संन्यस्त
 स्वर ॥ अरुणश्चादि ॥ ॥ समयान्न ॥ दवावाया
 दिद्युजा ॥ वंदनादि भूयदीय ज्ञान वि ज्ञान सैकल्य
 वि

दिदक्षिभनं ॥ वाचनजलनस्नानलंखनंतिन
मालवतिहासधादु अरिषकवदनोद्याणीवदि
नाजयानं ल्यायमाकुस ॥ समयवाहालयानं
जवयानं ॥ नर्क्य ॥ न्यासावम्य ॥ वलिकुमन
व ॥ इखायिखाकायवाकानेयाआनराजानकाका
लिकावपालकागायलसहाकलूय ॥ साक्षिथ

यवधीव ॥ ॥ ॐ निमलायमीयाविधिः ॥ ॥

नमः ॥ नमानवमीयाविधिः ॥ वलिदाकासं वडि
रुयानमाय ॥ चंदनादिस्नान आदिनम ॥ यजमा
नस्य ॥ ॐ अद्यादि ॥ यष्यराजुनं ॥ ऊजमानस्यख
मसिद्धिजयकामनाथं मरुानवमीयावर्धन
नाधनसकसुनिया अर्चनउग्रवकुं चन ॥ वाङ्म

समर्थं ॥ ॐ अद्यादि ॥ गुरुनमस्कारनामासार्धया
जयजा ॥ आत्मसुजा ॥ मालनीय ॥ ०७ ॥ यंचाव
लि ॥ पूर्ववत् गुरोयद ॥ नानसां ॥ नदवाच्चैर्न
यजमानस्यैशु ॥ लि याचक ॥ वलि सुमयनस्यैशु
नरायक ॥ कवचैर्नयक ॥ मलावलि वि य ॥ यंचैर्न
विर्न ॥ वृषदीय जाय सुजा ॥ या ० याय सकलधूम
क ॥ दवसुर्थ ॥ ५ कानक ॥ दवा ॥ जीर्वादि ॥ यजमा

नचन्दनादि ॥ जीर्वादि ॥ न्यासयाय ॥ आचमन ॥
॥ ॥ वल्लभैर्दाववादात्रयो वैकलियाचकनवा
रालयाको मानी यजावचित् यजायाय सुजान्
मादनीरु समय काय मालका आरु समय माद
नी विसृष्टन सुजाजा कार्येन सकली नयी थथ
॥ ॥ वल्लभैर्दावर्थथय या यजावचित् ॥ वाक्त्रास्यै

स्व पु य ३ सिं धु स्नान न याव ज वा ल व क्रा य ॥ म सा म र्द प
ल म्मा दि न वा दान च्चा स्यं दाय ज वा या जा उ न स ॥ थ थ र्कः
य जालि दा व ज्ञा न म र्कं ठि या लू र वा द्ध व न् म स म्पु ध
गु लि नी न ल सा च का व ड् का य क् ना य न रु य क् स र्ग व
भ व न ड् का य क् ख व स द्ध ग व लि या लि न न ॥ ॥ थ न
लि का मा त्री य जा या य ॥ य सा या व ॥ ठ व सा मु जा स वा द
व या व स यं रु या ध मि रु ल क चा सा चि सा ल ग् मु जा व जि न

॥ थं ठि लि का ठि लि पि व लि र्च व लि न र वा य ॥ ठु जा या ज
व स द च व लि थ लि लि श ना ख व स पि व लि का ठि लि श ना
द व न के र ॥ सा र्कं लि र्च व ये ना का क लु ये ना का च रु मा
रु न् स्व पु स थ पि लि स व लि स ज्ञा दि न ॥ ॥ य ज मा न
स्यं ॥ उं अ या दि ॥ उं ज मा नि स्य ख म् सि धि ज य का म न
थं म रु न व मी या व स र्ग न् नो ध न स य म नी या ० स य पु
का मा त्री या ग म र्च ल नि मि थ थं वृ ह हा न व सु या य ॥

पथराजन समर्थः । वाक्कपन ॥ उं अथादि । गुः
नमस्कार न्यासाद्यपि युजा ॥ मादनीय ॥ माल
नीय ॥ यं वलि ॥ विवलि ॥ यन्मिमूलनदय
त्रियाय ॥ विहाय न्यासः ॥ उं कं द्रुदयादि वज्रं
उं अथादि ॥ उं मयुवासनपा ॥ ध्यान ॥ उं
वंधकात्रसंकासा न त्रिकाटि समयुगा । मुख्यविष
निरादवी ॥ वत्युह सिगानना ॥ बालरूपी महा मायर

कोमारी अमुत्रयिनी । शुक्लचतुर्भुजाय धूलिनिहा
किं सुखं ॥ यद्यत्रा नमलिमोलि मूकालं कात्ररु
विगा नि सिराज समा वृता विद्यानं नम नि कात्रि
नी ॥ मोहा न्ध संयदालम्बी माय ॥ यज्य ॥ नित्यं
सर्वका मयुगी देवी सर्वयात्री महेश्वरी ॥ आनंदकु
नि गायक उलास ह कि कात्रि । नी । आत्मा देवी महा
नमि की मारी हरमगली ॥ आनंदय ॥ उया अति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वलि ॥ काठिलिह ॥ गणायति ॥ कुरुयाल ॥ महाकाल ॥ वलि ॥
दवा ॥ कुरुयाल ॥ सिद्धि वाम ॥ दवी ॥ कुरुयाल ॥
यान ॥ वलि ॥ वलि ॥ माल ॥ दवा ॥ दवा ॥
शिद्धि वाम ॥ कुरुयाल ॥ सिद्धि वाम ॥ दवा ॥ दवा ॥
काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥
निधि नि ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥
नजदल ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥
नजदल ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥ काठी ॥

ॐ नमः

त्रिभि रिव दत्ता दूर माना नृभरा को मात्री वा नृपी यत्र मय
वसुधा या नृपी मं गला ख्या ॥ को मात्री वा नृपी नृपिक
न विष्टता का य विन्दु द ह कि ॥ सव का ला किताना मा म न्दिय
नित नृ सुखि वा को नृ य क ॥ दी कि द्वा ला त ह ख व तु ख ल य व
य क सि हि नित का रा के ॥ स दाल मा ला य रु हि न व द ता न क व रु
लि ना मा ॥ ॥ वा ले हा र म ला नी डी ॥ को मात्री वा ल हा र का
ले द रु ग ना य नी ॥ या म यी ॥ लि ता नि य व ह रु दान वा
वा सि नी ॥ म म हा म य न मा नृ हा व व कु र उ नृ यि नी ॥ ज वा

रु सु म र्म का ॥ हि दृ ना नृ न वि ग रु ॥ य नृ नृ जा ध रा द
वी ॥ ॥ नृ नृ वि नृ म द या ॥ नृ म स वि या द वी ॥ अ ति नृ
आ ति नृ यि ॥ ॥ य व म वा रु ॥ हा य क ॥ य नृ नृ नृ व व
नी ॥ मा यी ला ॥ की स मा य क ॥ को मात्री ना म य ड का ॥ ॥ अ
ग्र नृ य व प ॥ हा र म नृ सि धि यु दाय क ॥ ॥ लो क य ॥ अ ति नृ वी
स व क म क नी ॥ ॥ ॥ रु सी य व वि का नृ द कि ॥ ग व
नि ॥ ॥ व न नी ॥ य वि म क का ख्या ना रा सा न द य ड क
न ॥ ॥ का मा ॥ ख्या ड ॥ व न दे वी ला न क व ज या नि नी ॥ ॥ व

गंगाजननीद्वीपंताम्रायसदाचिन्त ॥ यद्गुणायुग्मसुमार्क
 निःशङ्कंयष्टिकपालिव ॥ मोहनंमननवस्यविद्ययामा
 नुवागनी ॥ हाकुनालंजुयवृद्धिलङ्कावृद्धिप्रदायक ॥ स
 र्वलोकाभियस्य ॥ यमवृषोख्यममन्त्रिण ॥ दृष्टाकालय
 १० श्रीमत्सर्वकामरुणीदय ॥ बाष्पायामरुद्वयी ॥ खड्गा
 लीकमल ॥ अथयादानमालकास्तुत्याय ॥ मातामा
 या ॥ सर्वरूपसुख ॥ अरुणभ्यादि ॥ दक्षज्जाचार्य्यदुर्जन
 दक्षिण ॥ चतुर्नसिंदूरभारुनीसंगुणनवनाउखानस

कर्मकाय ॥ उकाभकदवाणीव्याद ॥ वाचनजलना शिष
क ॥ वंदनसिंहवभाऊनीमन्त्रसाणीव्याद ॥ जुनाप्रथिय
कावसमयकास्यनाथ ॥ थयाभाऊनीखलुसखुसमा
ल. कामरीयजासखु. थभाऊनीकमात्रीयजाधनकाव
विलायलयनसकवकावकास्यन. खलुयाजवसमीनिय
न. थभाऊनीरुसक ॥ त्यासासुनकाकात्रीविसर्जन ॥
थिलिलरुनयागलसथथकयानन ॥ कादिलिकाथकया

नं विलिख्य कालं मन ॥ कुरु मीथकार लिखासु ॥ मर्कल
पिष्टारुति समय यीथि न्यान नव नरु मेक कामात्री लीका
यसुन कावा हात्रस ॥ थकात्री यजा काय धन काव सुथया
यलिवा लय जाया आकु सममयन लाय कामात्री यजा
या आकु सलिहावनाल लन म माल नन लान अनन क
लकीन ॥ ॐ नि नवमी यजाया विधिः ॥ ७ ॥

ॐ नमः ॥ कन्यादहमी यजा ॥ वलिह मालका वडिनसा
सुं न ॥ लख वरु सिधु जज मका खानन ॥ यजमानः
स्यं ॐ अयादि ॥ यजमान सखरु सिधु जय कामना र्थं म
रुदहमी यवै सखरु मगाउ गुय गुद वावै न निमित्थ र्थ वा
रु ॥ वलया अनकु मन वा कुरान दय त्रियाय ॥ धवदीय
जाय हाउ समय काय ॥ दवाणी वीद ॥ देवाया र्था दि यजा
दकि ॥ न ॥ वलशुलकाव धी यजमान स्यं शु अलिक्का

यकाव क जानके दू माफु कियावक ॥ जेऊ दू मख सर्व
मनुय निष्ठा नन्द करायव ॥ धर्मार्थ काम मादार्थ
ननागमनायव ॥ ॥ कुरु लिलि विमर्जन ॥ जेऊ या नुदव
गण सर्व पूजा मादाय मा नद ॥ ॐ कुरु काम पुदानाय पुन
नागमनायव ॥ जेऊ ३ (सुद विमर्जे मान ४ स्वर्गाने गुरु
पुजिना ॥ सर्व कुरु लय नीकष पुननागमनायव ॥ न्यासा
कुरु विमर्जन ॥ सकलनी ॥ नासिय सुख साक्षि ॥ ॥

धनं लि (थका स्यान्त यानव मीया पूजा कयायाम धाय रु सिया
वाल मया नन्द दाका काका याववा हान विमर्जकाय ॥ दय निशा
कासा यदयदं ॥ नवमी नाति मजवन थं थं पूजा याम धाम
पुशका वरु थी कुरु काका काका यावययक ॥ यं मट वाया वि
विमर्जकाय ॥ (थका याम मा माट काका याववलन ॥ धनं लि यं
ववलितं विलिख यिनायक काय ॥ शिव लि (थया यिनायक का
य ॥ वाम पुवलिरु नवाकल म ॥ दय विलिखि थाम धनि मन
आकाश मालक स्यान्त काय ॥ नवनाय यावलिक कायक ॥ वलिरा

सवाट सानलंखरिनि सवायककाय ॥ स्वानययक ॥ ॥
थनं लिंयं सायकं ससिक स्वं गुदि द्वा द्वा द्वा यावगायनका
ले ॥ (थकायति ३०) ॥ (थदथ सवाट दजवखववलि द्वा द्वा
वात्रपं २वयददं स्वं न ॥ लायादायकं नयाव लंखनका याव
चनन ससिक चायावख युकाय ॥ (गले सदयकं वास गले
जं माके १०५) ॥ ॐ हूलनया दिनादवीति ॥ महाकाले क
३ यालवलि जवव सवात्रनं लवकाय ॥ मउकन दी दोला
कशल सा दी कामलाकशल सा स्वाने जयत्रयं कुचक ॥ ॐ जी

गाज हीलरु कामा लंयजमान नसंदरी ॥ अस्य रुद्रप्र
काल स्वइ रुद्र मरु ध्वनी ॥ ॐ हूं किन २० रुद्रं जय २०
रुद्र सादा ॥ ॥ वलि सा स इ सक नयाव कलहालं खनख
ॐ मेले लायाव ख गुजाय वनियाद द्वा द्वा द्वा यजमान लंज
लिधक विय ॥ वृद्धनहि ध्वनमा रुनी मगुल नवनाग स्वान दा
क स्वान थायत्रयं नया सवयं द्वाय ॥ इ सकनकिन ॥ ॐ सु
वदु निरुमिति ॥ थन लिनेलि लिद्रु द्वा नख गुयानं वलि सा स
ख गुयानं द्वा वन जवखववलि सवा याव नासु स्यं जवमवस

यद्वा या अउ माल आदि नया हा नया चक ॥ (थनं लं नि धाल
 ला हा न सिया वही यज मान युरु कि र्क ला हा न सविया वया हा न
 या चक ॥ भव य जा वा प्रिया नं सन नि ॥ थनं लि वा हा न न व स
 यद्वा या कि थि ल लो ही न द रु वा त दि न युरु मिया या हा न यउ
 चक ॥ समय नं कि धा न द वया (थं यज मान यां द वया
 (थं ॥ द वया नं श का का या व व लि द न द न न्या न रु कि रु
 चक ॥ ज स न धु न का व थ पि लि न ला य ॥ ॐ धी ल श्री य कि

दद्वा या न य न मानं दा त वि न्या हा वा नाम न ल नि प्रा म नि ख ल म
 हा ल श्री म हा मं हा ला ॥ म ॥ हा कि य या ध वा रि गु व ली ल
 का न स य कि मा र्ग य च उ क ला स दा व च गु व ही का लि का
 या नि नी ॥ सु लि ल द ही न ॥ मूल म नु न ला न अ द क सि
 ध उ य न या व मा ले स च चक उ व वा द न स न रा त स सि धु न
 हा य ॥ कं रु द र्ग न या चक ॥ ॐ व रुं नि ना र्ग द न ल नि ॥ थ
 न लि लि व ला का च क न का य य नि गु आ कू स वि य ल य न

सकचकं यि विद्याव समयइ वि विद्याव निवला थयनयं
 नयाजो १ यि विद्य ॥ (थेकं उि संयगु यामन दि गहायकं स
 फयनचोयाव मरुका लवलिहू का मी खलु कगवलिहू यं
 क्रमयत्रा गदि गसा मीवन ॥ उं नमनं दार्थला नायनि ॥ उ
 देवय १ ख गुकायकं उवक म्मनर्थ थक यकारे गुय १ थय
 यरु हनकं यि दि सिवा म्मन हू वनं हू दि या मूल दालन ख लु
 यिनं यदाव ह्रीयज माननयं नायन थवर्ण थिहू वाक न दाय
 काव थ मूल दालन स रुयकं ॥ वला क्का चकल क्का य ॥ मरु ३

का लवलिहू रव निवयात्र का वलि थसकाय ॥ दगु वलिर्ण
 ० का वलि थसवाचकल क्का य ॥ निं घान रदा न्याखय २ द
 यकं वा म्मन मी वदनानि म्म हू नादि विधि (थं लीं सायावरव
 लुहू थयमन ॥ थय म्मनयाकं न थं विद्य ॥ ॥ थन
 लि यजाजो १ जाजो १ उदयाजो १ दयकं यनद घ निजो
 जनयाय आका हा माला दान द घायक ॥ ह्रीयज मानम्य
 थि म्मन ॥ विन दान ॥ उं अ या दि ॥ उं याव उन्दा कं मा
 वना ॥ थन लि ह्रीयज मानम्य ॥ उं अ या दि ॥ य यला

खान २

जनं याचकवर्तनं रत्नदायाचकसिंधुज्जमं ॥ जचख
 वलिवलियवलिमहाकालद्वयामुनिवलमालका
 वायदद्यत्रिलिर्लखनदायाचकनदिन ॥ द्रवद्रु
 याचायआदिनद्रवयाथयसंमान ॥ समार्हममनदि
 न ॥ विधिर्थादद्यत्रियाय ॥ जजमानस्यखद्रुसिद्धिजय
 कामनार्थमद्रादहमीयार्थस्यखद्रुजोशसंयुगीउ
 प्रवभुदियवर्तनवाक्य ॥ समयकायवलिवियध्वयदीयज
 यका ॥ जगन्मोदि ॥ मधुलविज्जन ॥ समयकाय ॥ द

वस्तुनर्थी ॥ नकानकदवाहीवर्द ॥ आत्माहीवर्द ॥
 वाक्महायजा ॥ अत्रसंकल्प ॥ द्रववाक्महादक्षिण ॥ वाच
 नकाय ॥ सगुणकाय ॥ यद्यनक्तियेसगुणजा ॥ अत्रमा
 ल ॥ आत्रथिकन ॥ खलुसयद्यानयमिमाल ॥ वाचनजल
 नालियक ॥ चदनसिंधुसगुणमहावर्द ॥ लखनवल
 किंसमसयकासीदखायिरवाक्ययद्यानयमित्तल ॥ वा
 कालयासमयनयक ॥ जवायमरिया ॥ लाखाजदयकसुक
 लसं समयनयक ॥ यजावात्रिसं द्रवपासनमयाकास

पाठान्नदीकयकाव नर्थरायादाव समयसाश्च ॥ यासाच
 मनयादावविलिविसर्जनमगव यद्गर्भंथर्थया निव ॥ थनलि
 याप्रनेस्येजार्गठिजादावमवन थलुलिना कंरुसिधुमंद
 ज्ञानकंरुठियासुलदाप्ररायिरायाव गीयइमानअकयलु निन
 दिजयभ्रवथभ्रव कंवाहालवने मूलचुकलने ईहायक वसि
 चाकससरा (भयलवद वाहाल ननयकं पूजाव लियनिम
 धीयजमानसु जवयार्ननयक ॥ धनंलिमूलथक नीलजार्क
 सर्थठिलिसिधुविय सिधुमुंदकायकंरुकाय ॥ मालेनाका
 थसजैकुसेन ॥ ॥ ०० तिदहासाययनियाठि ॥ ॥ ७

१॥ यत्नं कियानि त्वय्यज्ञावलिमा लनासाय ॥ अथादि ॥ य
यत्नान्न ॥ यथा विप्रिनदेय त्रियाय ॥ श्रीयत्नमानस्य
श्रीयत्नियार्क ॥ जयत्नान्न ॥ समयत्नान्न ॥ नववर्ग ॥
अथिषकयदनायाहीवृदि ॥ समयत्नान्न ॥ वाहानसज्ज
कृमननिद्रया ॥ थथश्रुता ॥ ॥ ॥ ॥
अथयत्नधिकृयाविधि ॥ यज्ञाज्ञा ॥ ज्ञाज्ञा ॥ जवया
ज्ञा ॥ शिवलिप्यवलिमहाकालकृष्णामभुवा
नववर्ग ॥ श्रीयत्नमानस्य ॥ अथादि यत्नान्न ॥ य

जमानस्य निवाक ॥ विधिः (थदयूत्रियायवलि विधिः ॥
हीयजमानस्यं शुभं लि ३ ॥ जायमरुलसुतु ॥ अजुग
धादि ॥ समशय ॥ दवसूर्यर्ष ॥ दद्याहीवादि ॥ नका
नककि ॥ आत्माहीवादि ॥ अमर्यवगमिनि ॥ वापुस
यजा ॥ अमर्यवददि ॥ वाचनजलनालिषकं ॥ यद
नायाहीवादि ॥ ईश्वर्यि श्वर्यायवादानयासमयगया
व ॥ नय रयाय समयलाय ॥ थनलि आसामुलावः

लि विमर्कनयादावयववलि विदयूत्रिवलि धनि
मर्क आकाहीमालनस्यं थव २थ यमकाय ॥ याविथव
२सकाय ॥ उद्वनकायक उवकयु नखंतय ३धयदु
रुद्धनक वापुस यिदि मिमर्क रव पुक यापुलदा मरवि
कं रुयावकायनथव गु विव वाक लकायक आत्रकात्रल
खालं न आगमनन र्यकाव सुतं ये निमर्क मायकं लिधन
कं रुवयाथन ॥ आहवकाकाय ॥ रवपु निरुलयकास
ईक ॥ रवपुकयय ॥ वादान सममादाईकथ ॥ काथ

सुश्रुतसनाथ ॥ ॐ निचतुर्थिया विविस्मयं ॥ ॥
॥ ॐ ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगुरुव ॥ ॐ नमः सर्वथा यैः यैः नि द्वात्राश्वत्थमव
व । ॥ यथायदं तु सदाहा सर्वदिना गमं किं ना ॥ यानिनी
थानवीन ह्यः सर्वगुणसमानता । ॐ देयवमहायकु शीनाः

थावप्रदामम ॥ यस्तुक्ता सा सनयदी नुप्रयादार्द्धलैत्रका १ ।
सर्वसिद्धिस्तदासः दक्षिणार्धलैत्रका ॥ वीत्रासं यानिनीना
व यविषमि मलीनत । नमस्तु नव लिंदवी समयावात्रमनन
॥ ॐ निस्तु निमन ४ य वि मीममदा स्ति जी विन । निवृत्तुशुतु
यानी यानिनीगमसंयुता ॥ कुरुकादिक स्वयंदि २ निमिहोइ
राशिनी । निवृत्तुशुतुइशानी यानिनीगमसं कुला ॥ उंकासादिषः
ययी भमयसा लायकि किं ना । उावधी अतुसं दीला दहमसु विद
हं हि ॥ मलीयाना लवमोतु सर्वज्ञाना नरेषु ॥ यानिनीयाग

चतुर्विंशत्यार्यं च तेन वाहनं लभ्यते ॥ पृथक् वास्तु नूयन्त्यं स
र्वक काय विदुषः ॥ अजरादि मरुतैः कृका नाना नमो मुने ॥
जंज कौंक्षीं च ४ अजरादि कैः याला यवलिं गृह्ण २ खा हा ॥
हं ह्यजरादि वलिं ॥ ॥ नगावली हाथानि निवलिं ॥
अव उर्ध्वं भमहा ना हा ३ र्म र्खी सुमरवी वला ॥ वयनीयु मथ घा वरि
सो म्यारी मा म हा वला ॥ जया व विजया यवः अजिना अयवा जिना
॥ महात्मना विदुषा कृ ६ का वाका हा मरु का ॥ जान हा नी म हा नी
य ६ कुनी गुक्क वनी ॥ पिय नी यष हा नी च ७ हा नी नमो हा ॥

त्रिंशत् ॥ रुद्रकाली मरुदाय रुद्राली मा रुद्रिका ॥ द्वाविंशमनु
 मानुदा ॥ कर्णिकाया लक्ष्मिणी ॥ द्वाविं (होषमरुया) नि ॥ ६३ ॥ म
 दुहावामनी ॥ ७३ ॥ अथात्रैकां ॥ द्वाविंशायानिनीरु
 वलिं नृ २ स्यात् ॥ ७३ ॥ वनीनियानिनिवलिं ॥ ७३ ॥
 ननायनुष्यष्टीयानिनीवलिं ॥ ७३ ॥ अथात्र विजयायैव ॥ अयनी
 वायनाजिना ॥ ननुदा रुद्रकथलीमा ॥ कलाय वाचकासुथ ॥ ७३ ॥
 ॥ दिव्या ॥ नीमहायात्री सिद्धिया ॥ नीन (गव्यनी) ॥ सा किनीकालनु
 जीव ॥ उद्धवणी निष्कनी ॥ ७३ ॥ नीनीनानीनीसुला ॥ यवनीनी
 उलामिका ॥ नीवनीयमहानंद ॥ दालामुखीनथैव ॥ ७३ ॥ यि

भावीद सि नीवेव यक नीधु रीतथा विषल क सर्वसिद्धि रुचि
 वृ क्तानथेवय ॥ ८ ॥ ई कोनी राखनी दीया धनादि कलरुचि
 या । माकनी काकट छीय तथा विप्रयानुकी ॥ ८ ॥ राक सीधा
 नमादाय नकाकी विवत्र विनी । येके कनी नी देवी राखी हुका नी
 नत्रराजनी ॥ ८ ॥ वीत्ररुम दाली के काली विरुता नना । का
 दलासी मरुदाय वायव मरुदाय नन ॥ ८ ॥ वाक्रीयव मवीनाडी
 उचि काणी वनी कथा । वात्रादी नात्रासी ही य विवाह नीवगुष्ट
 वि का ॥ ८ ॥ वृंद दवी मरुदाया पीवली गृह कुम मदा ॥ दीव
 वस थियानि नी गोवलि गृह र सर्व भक्ति क नर मम सिद्धि क

वृं कुं उरुट स्याहा ॥ वृं विवगुष्ट वाया नि नीवलि ॥ ॥
 नना मरुदावलि ॥ उं उ कवे रुक काम मूर्य यत्र विप्रयानुका जालपी
 ८० ऊय र्या षट्का (१) मधयी (२) विप्रयानुका मरुदा विहंगम नका
 । आवाय सिद्धि सी (३) यत्र विवगुष्ट वृं विवगुष्ट यानि नावृंद युके
 यक ऊय र्या लन कसरु यादव दवी नमामि ॥ ॥ यो रु दि वा
 ननि कुं द वादि विवगुष्ट न सफ वागाल मूल कुं रुयी (४) ययी (५) विप्र
 मवगुष्ट (६) मलकला मरुदाय । सिद्धि विवगुष्ट कवृके उद विहंगम कठ ध
 मका नावगुष्ट कोलु लय रुनि यो नमराय नवल उा विधाने य धान
 ॥ २ ॥ याला के या नमरुदाय कलय निन गत्र काम नय स्व नय

उजा न्यामदृष्टा मयदयदृष्टा सकला उद (हायद (हा । ही (हील
 पालिजान यधुयमिनिनयदृष्टा म विष्णुयलषू हीमलायागद (हा
 मयनयथमिनीनाकिनी साकिनीनी ॥ ३ ॥ काभीनयायद (हा
 उविदमनय (अवकवागदलून मी नायदृष्टा इकेउ न सिविनन
 कसिद्धिऊउहान । कोलानिया दविकाठ हिमनिनिहिषेन
 कीविद (हायया (न सीनाकु म धय (हायउयननगन कीहान
 कीमदवा ॥ ४ ॥ कपुनिकाक (हायमगधयनवन कपुनिका
 कलि (न विष्णुउया मम (धयनवनसेयन न क नायदृष्टा लषू ।

यानिद्रामगुजाम्यावि विधवधनना माननकासुसर्वा सिद्धागुष्टा
 सुसिद्धा विविधवधनना दिवा सिद्धि ददनु ॥ ५ ॥ रेवईवाम
 उसिद्धि यनयन विमनै दुगतिनायनवा हामसुनै त्रियसु वलि
 पलिनउयै लंरनेसुवविद्या । दीर्घायषै केविले नमनिधिगुनिकई
 यागुकां कामसिद्धि सर्वविना ददनु अलिवलिचिमिना रुनवाना
 नयका ॥ ६ ॥ इकायानिमालि गुरुगननम (हा विद्यत्यानन
 नवा नाजद्वान जलोयविद्य दयगुरुयै बाधिनयमम (हा । कीकी
 रुद कोनयनी रुदरुदरु सिने धयनी चिवनी रुयनी मनुमाना
 किलिमिलिचिलि ॥ कोलरायादिनकी ॥ ७ ॥ सागुका कामन

धेवत । धन विद्याय (आदि) सर्व शान्तिं कुरु २ वलिं पृ ३ २ सादा ॥ ३ ॥
 मखव्य काममसादा ॥ ४ ॥ निमलावलि ॥ ५ ॥
 १ २ विष्णुजा ॥ जं कालि २ वज्र देवी लाह द अयन म ४ ॥ उक्त विष्णु विवहा कि
 यका यनम ॥ स्वयं यख लनामाय ॥ ठाकि कार्याय न सनः ॥ यद्युच्यते त्वया
 गीर्षं स्वप्न नाथन मा मृत ॥ अर्थं यद्युच्यते ॥ जलन संपादक मुने न
 लक्ष के वचना वपु धनं च न्या मृती कृत्वा दय नादि यजय ॥ मनुं वावय ॥
 उक्त यद्युच्यते ॥ अय विष्णु विष्णु माया धाम हि ॥ न त्राजी वय चादया ॥ अद्या
 दिवा क ॥ इति यो सा माये सयनि यानाय ॥ मयि यद्युच्यते ॥ सयन दद
 ७ ॥ ४ ॥ निमलावलि ॥ ॥ ॥

१ २ ३ मम पुत्रिकाये ॥ देव्यादियीति न स न स मला किं दुर्गं यावद्वर्ष
 मन्त्रादि विविध नृपां । स मादिना विविधि स मु स म वै य नी देवी नमा
 मिहि न सा क न स न दे विनी ॥ १ ॥ यस्या क न व के न वाल स वा दाय क व
 जं किं व न द विरु म ह ल पा र्क । वामे बुरे ह क व न न द र्घ ० या ह
 न न न नी ग य र म र्द ज वि न म र्दा ॥ २ ॥ सिद्धि किं न ग व नी म हि र्वा नि
 स नि ॥ उरु प क र्क व न मि कि न द र्क का नि ॥ नी ली त ल र न य न ग य वा
 न व क्ता स वी थो सिद्धि क न मि ज न नि न मा मि ॥ ३ ॥ या स न कि
 स र व क ज न नी निरु ध र वा यी द या ॥ या द वी व न त्रा वि द र्घ द न नी वि द
 के ना ना मि नी ॥ या द न र वा क पा ल क र्क व नी क काल मा ला क ली सा द
 वी ल व ना म म ग ल र्क द र्क या स दा र न वी ॥ ४ ॥ या द वी म हि र्वा म स

वधिन म्हादृष्टासस्वने ४ सं गच्छ सचि ४ भुव रु लवल ध काल ल ग व
ने ४ । नृप नीदि निज नृप द य द न नी वा द स रु मे य मो या विव्य मि कि का
त्रिरी रु ग व नी का या य धी या रु व ४ ॥ ३ ॥ या का ली व ल का लि नी कि लु क ल
रा व रु म नी क ल की द नी क ह रु म ४ ॥ ४ ॥ हिल स न्क काल पा ला म्भ ने ४
की ल नि ने म ने नृ व रु द ल ने रु नि १ स म्भ मा दि नी या या द उ स नी रु रु
म थ नी बा या लि नी ४ ॥ ५ ॥ ॥ वि द्य र्थ उ क ज न व र्थ न क र्थ काला
यि सा मा न न र्थ स म्भ न रि न य थ न वि ठो नि रु का य र्थ व रु षा । य स्या
व रु षि सा न कौ ठ र ल ल कि क्का रु उ ग न ना ली मा ली व न र्थ यि री स म्भ
दि ना का या लि नी पा रु व ४ ॥ ६ ॥ स र्व व रु क नी नृ व रु वि व स ना ना ल
उ रु गी ग र म्भ य न नृ प र्थ कि दि नी त र म र्थ रु का का न स ना वि नी ।

मान नृ व रु ग र म्भ ४ न ग र्थो ना स य मा ना य र्थ व रु नी व र्थ नृ म रु
म थ नी व रु म द या रु व ४ ॥ ७ ॥ या दि या स द रु ल व रु व स ना द रु ४ स
दा व नि ना या रु उ न कि नी डि रु रु ल व रु व र्थ न रु रा नि ना ॥ या स रु य नि न
म य न न य ना सो म्भ मा स र्थ या दि वा सा य वा न न ग मि नी रु ग व नी नि ना म
दा या रु व ॥ ८ ॥ या दि यो स न सि दि कि म न ग र्थो स स य मा ना स द या यो
ले यो ग र्थि ना स य रु नि न ने ना ला कि ना या य ना । य स्या दि य मि र्थ
व ना व र्थ र्थ र्थ स ग रु ग र्थ र्थ स र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ
उ ग र्थ यि नी । १० ॥ य स्या ४ ॥ कि नी डि रु रु ल व रु व र्थ न रु रा नि ना
सा य स्या ४ ॥ यि उ ग र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ
व रु वी नि व रु वानी नि स नी ना ग म नो ना मा र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ

प्राचिरेयातुव ४ ॥ ११ ॥ अथ इति श्रुत्वा क मात्मन नि सक्तुर्नरु द्वा निना ४
 विलयः सुखात्मानससो रवा डं जनमनावृद्धिं समायागिरे । ओ यव्व
 वीर्यं य (६) लि ४ समलं का का सुहा लख्यर्न ४ ४ स्वर्पद विर्न इ नो त्रयमर्न
 वे निधुर्वन स्थिति ॥ १२ ॥ इति इति श्रुत्वा क समाय ॥
 (३) यादवी नवमी प्रियातु गवती मोनद मा लधिना चक्रायु लुमरु वप्रराज
 गणा धारी सुमना विवा । रुत्वा इति इति सुमवलि न सानंददवी सु
 ना नंदवी सक्तुर्न मा मिनि नसा सव्यर्थ सिद्धि यदा ॥ ॥ यादवी म
 वरु वरु पुमथनी या ध्वगु सुकुवि नी या माता महिषा सुत्रयै द्वक नी
 यात्रक वी जा हाया । या मा इति निरुत्वा सुदलनी यादवदवा किनी
 सादवी ममलक द विरुत्वा सुज नरु सदा व विरुका ॥ २ ॥ यव्व सि

गारुगवती रव लु नुड य गुं या नास्यनी नि नयनां वर यी नद हां । वडादि
 सायुधधना वधि वरु रुत्वा कल्यान मा मिददरु देरु विना हाका नी ॥ ३
 ॥ यादवि जादरु नका ल मिर्व सिनी सा हाका दि हाय धधना वनरु का व
 तु । मा लु वनी कि गदिना म निरु ४ समर्न देवा विना हा नक नी इरु दाय
 वरु ॥ ४ ॥ रुत्वा न मा मिजन नि यन मयका रा व (६) हा का नि नयनी
 यमद रुका र्थ । सव्य य धा ध्वय विरु विग वा वरु रुत्वा देरु धना हा नक नी
 यमदि रु सुमरु ॥ ५ ॥ ना ला नु व रु स द सो नव यो व ना र्थ नि मरु का
 नय विरु सिन वा न रु पी । रुत्वा दि हा रु धन र्थि नव स करु रुत्वा गी व रु
 नाय व वरु युम मा मि निरु ॥ ६ ॥ वरु रुत्वा निरु न नी मृग ना

जसं स्का ॥ गरवन्दु कुलुधवनाकमलायनाक्षी ॥ यागार्कहमदिधन
लीमूनिदवर्वाद्या ॥ यायासदावनसदिचल (हलिनासा ॥ १ ॥ वाय
यदि कुमुलसंस्मि नदिव नूया रुक्मधुनाधुन समुद्रत्रयकु रुक्मा ॥ २ ॥
सुखवर्तु धेदमती ममत्रगुवणा ॥ सुखानिदुमि इतिगानिस दारु वान्या
॥ ३ ॥ यद्रुसदि कुत्रिसुमलिकयगुसंस्का ॥ योनाम्वना केनकेचय
वर्तुदहा ॥ रुक्मनदादिविधिधयधसाजिनाया दायी नमासिजन
नी ॥ वत्रचगु नूया ॥ ४ ॥ वीहमनेदिकुत्रिविह यिककानिद
हो ॥ यीयम कानिजननी मनिचलिकाका ॥ ५ ॥ लासिवरु हावहा
कि नदादिरुसं ॥ रुक्मानमामिहोयसानुवनव्यनीमा ॥ १० ॥ या

हास्यरुगवनी पनमात्मनूयी ॥ सुखिस्त्रिनि ॥ यत्रमविध्वमयान्मइ
दहा ॥ संसात्रमाहिनमनाक नूनी समुद्र ॥ ६ ॥ गीमा नूदाकु ममवा ॥
क्षिन्ननाजलक्षी ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ कि वलिकासर्वसमाय ॥ ॥
१३ नमंणी वलिकाय ॥



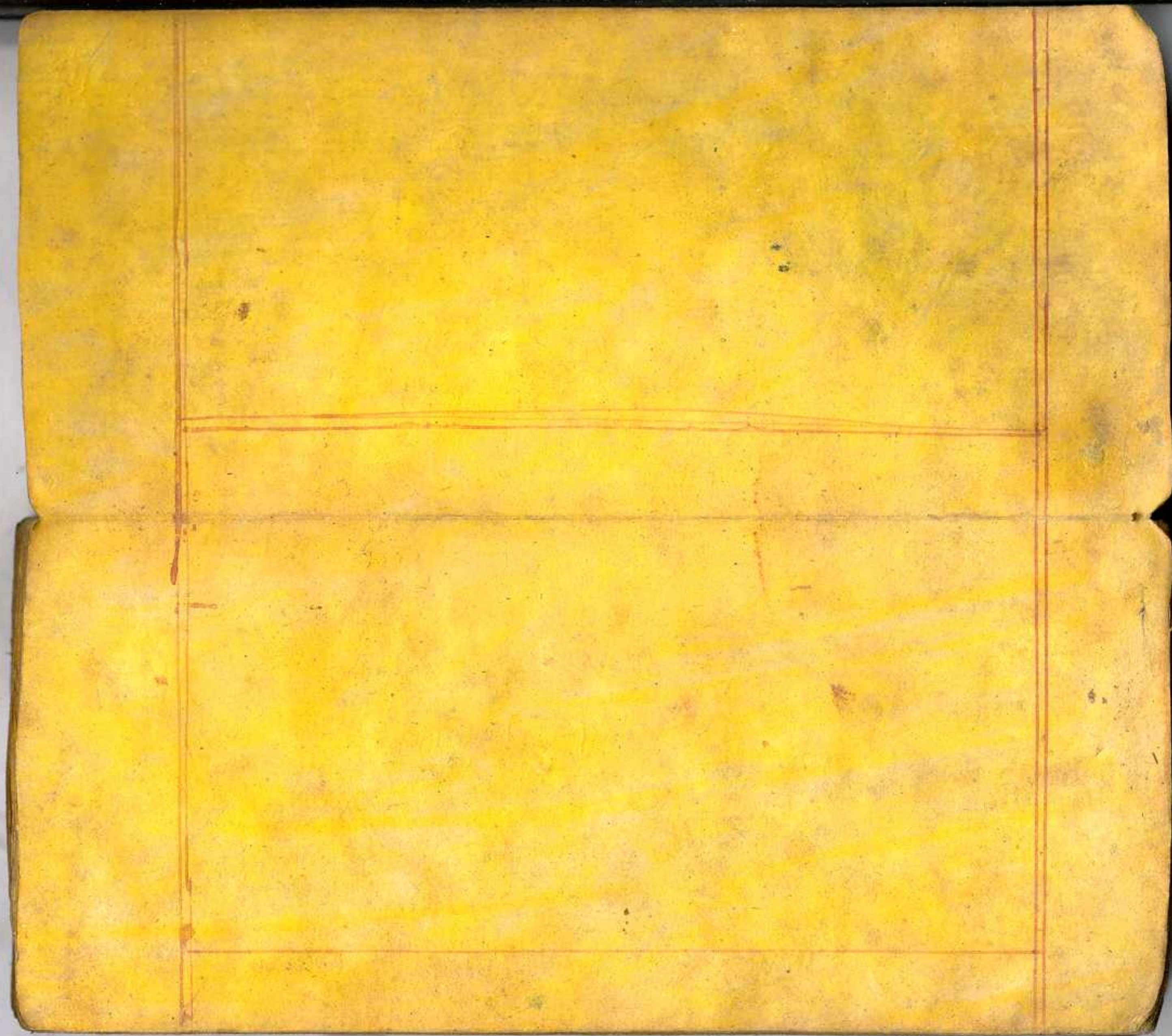
२८१

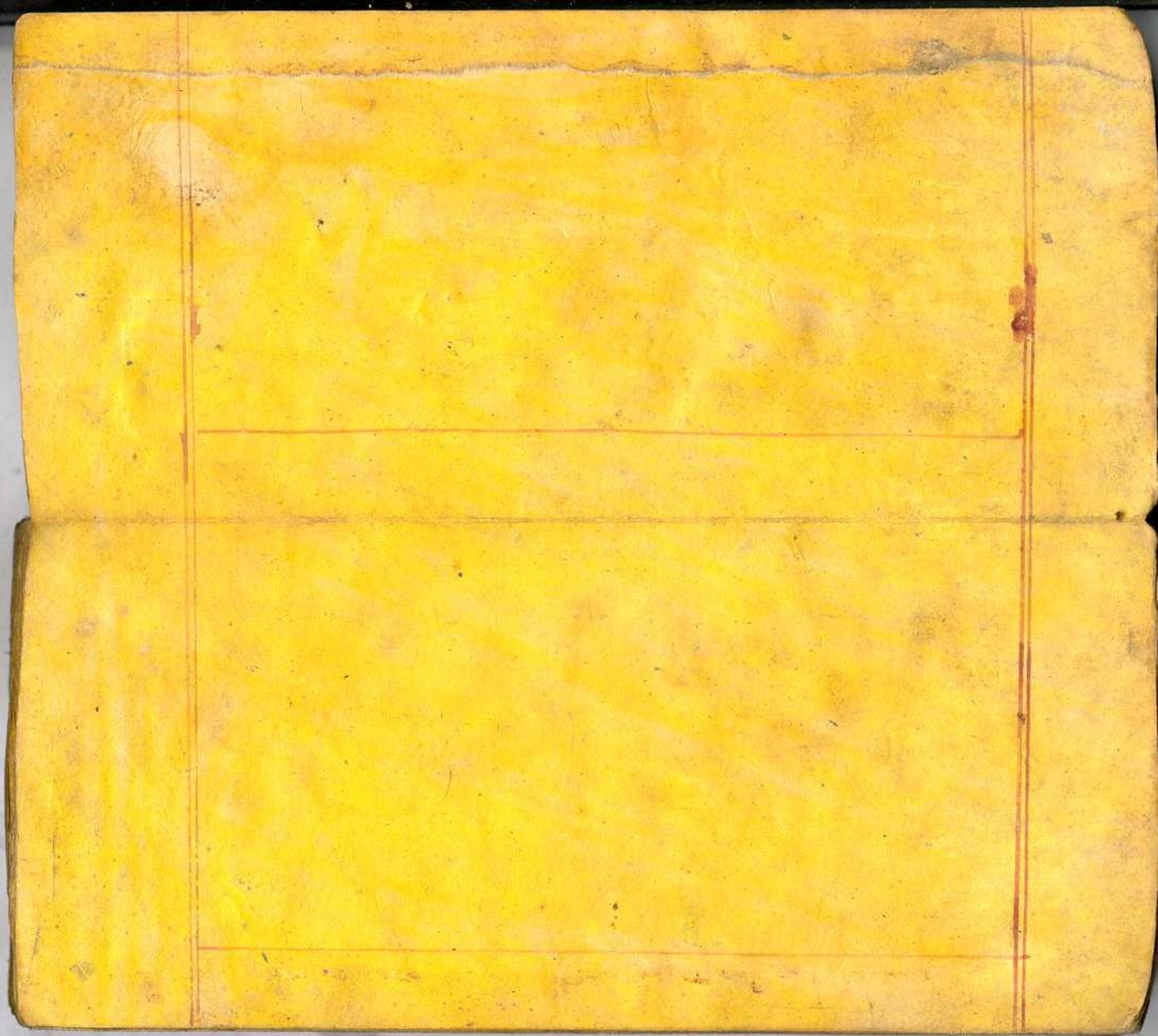
महि कृत्यायूक्तकथ ॥

आर्य समाज
ASIA ARCHIVES

3143







[illegible]

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in a dark ink on aged, yellowed paper. It consists of approximately 10 lines of text, with some lines starting with a large initial letter. The script is dense and difficult to decipher without specialized knowledge of the language.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in a dark ink on aged, yellowed paper. It consists of approximately 10 lines of text, with some lines starting with a large initial letter. The script is dense and difficult to decipher without specialized knowledge of the language.

[illegible]

[illegible]

सुखदयनी ॥ ५ ॥ ५ ॥

[illegible][illegible]

१६० क
आत्मक महात्मनः
गोपि ॥

ये विवात्र सजाया भगमूले याकी
साहनकाशन ॥

एवमसिद्धं लिंगं भूवि ॥ ॥
संसारं वाहनायाक
तायनी ॥ वायनी ॥
कलसधन ॥
तिष्ठन्तता ॥ दाल्याख



॥ ॥ वृषः दक्षसिद्धिं लीनां दालः ॥
 लक्ष्मिं जगदायकं लक्ष्मिं नो
 मत्स्यावलम्ब्य ॥
 दाल्याख ॥ आदिन ॥
 वासुधैव कुटुम्बकम् ॥ स्वतन्त्र ॥
 मूर्ध्नि ॥ वसिष्ठ ॥




 वलि

 अथ यान
 आसिधम

[illegible]

वलि. पूर्य
य यण।
वा. क. र. थन

वामन धन ॥ सज्जनसिनाहालय ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ मणि कुंज मरु नि
या घलि योग याया धध ॥ नव नाश कुंज यावल इल लाव
आगमगल ल. यं या रवाल ज्या लया शिर्न य इव सने वाय
द थू अरु य द्वा धन वि अरु वृद्ध याय वृद्ध या वा सवा
क १ क्षात्र याय धन चिं रि न या वा न नरि काना क नियाय
पठ वा सन वाय न वा हल ॥ ॥ धन अरु या उ का या
न्या स या य ॥ अरु वृद्ध या की दी य नि न्या न अरु या य
स र्थ दा व अरु सिलिक ॥ पूर्वा दिन ॥ ॐ ॐ ॐ नमः

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

अथ यादु कामिण्यादि ८ ॥ मूलमनुनाम ॥ अथ ॥
दुं जया ये या यू ०० त्यादि ८ ॥ मूलनमम ॥ अथ ॥
वुं वुकाय ००० या यू ००० त्यादि ८ ॥ मूलनमम ॥
॥ वलन ललावयज मानसं हि संया मलनयक ॥ माल
कारि न यावशिका धकुतिया द आ य य द द ला कु ति वा
थ हि या द व न य द वा म न शिका ध व द का ध अ व य द अ व
००० ध न वा य अ र्थ या उ म र्थ द व अ द हि लि लान द व
या म रु ध ॥ ॥ थ गी जय मानसं ही का सी का वा न न य

क मूलमनुनाम ॥ श्री संवर्ण य उ यं मालका न का न य क
रु न या य म क उ ०० मालका व य ॥ व न हि धु हि का ल स
क उ का व न आ द न द र ल दान न न ॥ थ या उ व स य
व व लि वा य स्व व स वि व लि वा य का थ ना व लि या द
वि या न न ॥ द व न द नु त्रि व लि ॥ मालका वा य धू न वा व
धी र ज य मानसं वा द्ध धी सी थि या व न ॥ लि न दान ॥ ॥
ॐ अथ वा ला द ॥ ॐ अ थ दि ॥ ॐ या व य द क मान न म

ही जगन्निज नावदु । नावत्वं सचित्रीकाले चलं स्थायसि
नीवैते ॥ स्त्रिंशत्तममहादेवी देवानी मनः काचित् यथावदे
हीनि यथैर्न नावत्वं स्त्रिंशत्तममवत् ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः
स्यं ॥ ॐ अद्यादि ॥ यजमानस्य खड्गसिद्धि यकोम नाथं
यानायदा स्थायनस्य फलं नीया उग्रचक्षुः देव्यैर्न निमि
कश्चिदर्थः ॥ सूर्याय अर्घ्यं नमः ॥ यथा राजन समर्थदा ॥
वाङ्मयनि सूर्याय अर्घ्यं पुनः नमः स्थापय देव्यैर्न सांगया ॥
न जायस्मात्तु याथ गाय ॥ दवन्त्यैर्न दं न सिद्धुन सद्यु

दान ॥ उक्तानक देवाहीर्वा द ॥ वाङ्मययजन ॥ दक्षिण
दानं ॥ वाचनजलन अतिथिर्क ॥ वन्दनायाहीर्वा द समया
नं वल्लिविसर्जनं ॥ दद्युनि खल्लिजाकावाय द्वाकि अ
र्थं यामिव ॥ ॐ निनव नाथया ॥ ॥ द्विर्थनित्यकर्म
यायनव नाथस्य ॥ लखवि याव वल्लिसमालका वजिहा
यानमायावचन सिद्धजजमका खानन ॥ थुनलिय
जमानस्य खानन कजायाववि स्तीहित ॥ ॥ ॐ अद्यादि

वाङ्महासीमालका दयूत्रियाय स्मृत वाथयाय द्विथ
थथ ॥ जजमानस्य स्वक सिद्धि ऊय कामना थं यात्रा
यगस्तुवनस्य कसै मिया ० उद्यचलु निरुक्त म्दय
ईनवाक् ॥ वंदन आशा वीदय जमान सँ आ कस सुआ
यथमकाय दयूत्रिवलिवाय द्विथ ॥ द्विथ नवरात्रः
सथयनका कृता थथ ॥ नवरात्र मान या थन ॥
॥ थयनका कृ यात लहा नवरात्र सु निरुक्त म्दय थ

धूनक दयूत्रिवलि काय ॥ ॥ धनं लिखु दिह मरुतः
कालवलि क लहा जवाया क रायणी ॥ का लाल्य
गुला ॥ शिद थन जव सवाय ॥ कृ वलि वा म्दुता
वलिवाला वया क रायणी ॥ का लाल्य गुला न हा
यिद थन खव सवाय ॥ धी थक लला क या खव गु
वाथ आदिन लि वला जिल २ जव खव सन ॥ धनं लिख

सुवकावर्खं सु सिद्धलय लानयिका यावत्तसुनया
वयजमानस्य (मयदक्षि) धनयक आरंभ नद्ययाः
स्वाननयिन स्वधुय ३ यिं नं यम मुदि धृयदरुद्धवर्
उद्धवनकार्यक वाक्कदाद्धवर्न स्वमुष्मा ललालव
स्वानयिं नं यं दाव लायन धवर्ग विद्याय कोवर्हया
वे आगमयाम् ल दालद्धवन लभा यवदयुकात्रनइ
कयंन कल ६५ दि सकु नादयक ला सा ला वई नं रु याव

वसावकं स्वसि कसस्वन धयाद्धवन का गाल सद्धस
कनन ॥ ॥ धयाद्धवन यदवासन चायदियत्र चाय
अव्कालवाय (थकं ६५) वयि स्वा ला ग्व २ डा ७५ थं का
ववाय ॥ नागवला मूलकं च गुत्त नि न्नुत्ति का मय ४५
इवी मां स या कला नि सिद्ध नं यूर्ध्व ४५ क मा न ॥ यूर्ध्व नि
संवाय सिद्ध दथ ॥ ॥ धन नि कल ६५ च न या य ॥
वाक्क जान ॥ ॐ अ या दि सु र्या र्च गुत्त न मं र्का रं न्याः

सार्धं याग यज्ञा आत्म यज्ञा स्व नव त्रिविध ॥ अथ
 दि ८ ॥ उर्यां जलि ३ कल हास ॥ ॐ गी गादि. सय अ वि
 नक ७. या न. राणि. तिथि. वेद. य न. ग्रह. लोकपाल
 अथस्मा मादि. यत् ८ न द यज्ञाय ७ ॥ उग्र यज्ञा ॥ उज्ज
 आ नद व द्वादि ८ या गत ७ ॥ मूल म कु द द थ स ॥
 उंज ज यादि ८ म ल न द थ स ॥ उंज उ द्वा आदि मूल

च
 न द थ स ॥ यत् ७ न न य म न स ॥ उंज रु दे ला स ॥ उं
 ज स २ उ द्वा स ॥ धू प दी पु ति छा जा य स्मा ७ ॥ अ उ गी ध
 दि ॥ ॥ थ नी ले र्वं उ नि र्म क र्म ॥ उंज म ह्य रु य अ
 स्मा य रु न ॥ उंज सर्व विधि क न र्म ४ सर्व रु न र्म या व लि
 य द्वा २ स्मा हा ॥ म न रु ना उ या न स रु ल न र्म या य लि न
 र्व न. स लि वा क न ॥ र्व रु मी स्मा न ज ल न रु स क न स

सिद्धनदवि४

वासंलन ॥ नं० अं० आ० त्रुड यं उ० यो० उ० व० ध० यं० या० य० ॥
नं० अं० ज० य० ॥ नं० अं० वा० का० य० धा० ॥ यं० वा० म० न० न० स्ना० नं० ॥ स्ना०
न० क० ल० ॥ नं० अं० स्ना० नं० ॥ अ० लि० मा० सि० न० स्ना० नं० ॥ स्ना० स० म० क०
न० च० न० नं० य० स्ना० य० वी० न० स्ना० न० व० नि० थ० व० २० स० ॥ रु०
ल० स० रु० ध० धू० य० दी० य० य० लि० स० रु० अ० ल० ति० य० ति० का० अ०
नी० वी० द० जा० य० स्ना० न० त्रुड यं उ० वि० ध० अ० न० वं० भ० दि० ॥
१ ॥

१ वं० अं० अ० अ० जि० ना० को० मा० नी० ॥ १ ॥ २

प० र्व० व० न० निर्म० क० ना० दि० स० क० ना० उ० ॥ थं० वा० ग० ल० मा० ल० उ०
॥ स्ना० न० व० नि० थ० व० २० स० ॥ य० च० धू० वि० ज० या० मा० रु० व० व० नी० ॥ २ ॥
॥ य० ति० का० ना० स० क० ल० ना० व० य० ॥ थं० ॥ य० उ० ना० यि० का० अ०
य० ना० जि० ना० वं० व० वी० ॥ ४ ॥ य० उ० रा० ज० नी० वा० व० नी० ॥ ५ ॥
य० उ० व० नी० स० रु० नी० व० न्या० नी० ॥ ६ ॥ य० उ० न्या० मा० रु० नी०
वा० म० रु० ॥ ७ ॥ अ० ति० य० ति० का० अ० क० व० नी० म० रु० ल०
नी० ॥ ८ ॥ म० ल० न० उ० य० च० धू० निर्म० क० नं० व० लि० अ० नि०

लारुनकासुनननत्वायस्नान.डाधनस्नान.सुल
मनुष्याभिमृगस्नान.स्नानकलुषनस्नान.अलिमा
सस्नान.वन्दनसिंहनद्वि.यज्ञायवीग.स्नानवनिथ
व२स॥रुलसमुदा.धूयदीय.सु.रु.आ.त्र.नियतिः
छा.अ.णी.वृ.द.का.त्या.य.दी.तु.व.व.व.नी.उ.व.य.गु.या.न.
इ.र्न.त्वं.नी.दू.वा.ना.य.४.क.य.क.य.क.य.क.नी.य.स.ना

मुजयंदहि नृपचतुर्नमाम्भुन ॥थविभिर्नयुव
गुपरेतिनयाकर्मभुजयायधुं२२अरुगन्धदि
॥खलुस्नानयाकावलिरामकाकालवलियाशि
नंयलीन॥खलुनथीयसंथिलिनिथयसंअवय
अअवृणवायथसंलीवकिलायावरवृण.थः
तिलिन्यासयाकाडा.चतु४समचननलययधूपक

स्रवर्गुहालाका नथलिउलिउ द्यावनयायः कंरु मनु
 मन्त्रवीज आयाव न्या न ऊर्द नि लि थं न ॥ उं ऊव
 आनु स्रवर्गु मं नू र्ग ॥ थलिउलि कंरु थव रं स थै न ॥
 थलिउलि याऊ व सयं व व लि. रव व मणी व लि. द्रवः
 नंदयु लिव लि. अर्ध पाणु आ का हा मा लठ मयव
 निषो व द्यो न सा ॥ ॥ सकल तवि। यधन का व व लश

लकावलि नदात्र ॥ उं अद्या ॥ अथ भति ॥ उं अद्यादि
 उं याव व द्यार्क मान् ॥ लित्रा रव मलाद वि ॥ सर्व
 लक्ष्मीयवृत्तित्वं ॥ यजमानस्य खड्ग सिद्धि उयक म
 नार्थं मलाख मो यवृत्ति खड्ग स्थायन सक सति वा
 ० उयव उद यवृत्ति न नि मि र्थं वाक् ॥ ७ ॥ 
 ॥ नना वृत्ति न मानं रू ॥ यजमान न ॥ उं अद्यादि

पृथराजनं ॥ जयमानम्यं ॥ ॥ नमो भगवते
 न ॥ ॐ अथादि ॥ सुत्रं स्कात्रवनीतिन ॥ जलार्थ
 ॐ अथादि ॥ आत्मायुजा ॥ नमो मालनीयत्वे ॥
 ॐ अथर्वमालिनीति ॥ साधन ॥ ॥ श्रीसर्वज्ञानज
 वाहनं ॥ ॐ अथादि ॥ अनेन मण्डलं श्रीआदिद्वया
 इकां यज्यामि ॥ ॐ वलि ॥ ॥ धवजवसन्ति
 श्रवणस्यवलि ॥ १

ॐ नमो सनाययायु ॥ ॐ अथादि ॥ अथादि ॥
 अथादि ॥ वलि ॥ ॥ मयनासनयायु ॥
 ॐ अथादि ॥ कलयुवद्वकनाथयायु ॥ वलि
 ॐ अथादि ॥ मयनासनयायु ॥ ॐ अथादि ॥ अथादि ॥
 कलयुवद्वकनाथयायु ॥ वलि ॥ अथादि ॥ अथादि ॥
 अथादि ॥ अथादि ॥ अथादि ॥ ॐ अथादि ॥

उद्युच (७) लि त्र भ स्वा हा ॥ उँ ५ त ल म द्द त्रि लि र वा
य यो ष ढ् ॥ उँ ५ हूँ ५ स दा व द्द २ क वा चा य
हूँ ॥ उँ ५ लीं मां शं स न उ न या य व ष ढ् ॥ उँ
५ मृ लू रु न अ य य ढ् ॥ क ना न् न्या स ४ ॥
॥ आ स न न ॥ उँ ५ आ धा त्रा ण क य या यू ५
॥ उँ ५ न ना स न या य ॥ उँ ५ न्दा य या य ॥

उँ ५ क ला य या य ॥ उँ ५ ना ला य या य ॥ उँ
५ य द्वा य या य ॥ उँ ५ य रा य या य ॥ उँ ५ क
हा ना य या य ॥ उँ ५ क लि का य या य ॥ उँ ५ सि
हा स न या य ॥ उँ ५ म दि षा स न य ॥ उँ ५ हूँ रा
स न या य ॥ उँ ५ नि हूँ रा स न या य ॥ ॥ न ना
ध न ॥ उँ ५ उ द य उ म रा द यी ध्वा य इ ण य

कीलिया। नयनामी कनकासा विद्युत्काटिः
मयरा ॥ यी नवक सुलाहा नमः विनयाचात्र
हा सिनी। किरीटिक पुलाकात्रा कयूत्राम
लिनायना ॥ वल्लमाला विचित्रुदा हात्रमाला
वल्लविना। अष्टादशगुजाकान्ना दिव्यवक्त्रा
हविना ॥ खड्गं वाद्यं नथचक्रं वज्रांकुशव

नाधरं। उमर्लुं हल यणच दक्षिणे नविना
जिना ॥ रुठकं धनुर्दक्षिणं नयार्द्यं सु
सिनी। यादं नर्जनीरु सुव खडा मं कं हावा
हाकं ॥ विन्दु मयानथसिद्धिः अथरु गवनीय
ना। सिद्धासनसमानुदा मरिषा वादवर्जि
ना ॥ मरिषासुत्रनिगीय सर्वदेस्या विनासि

नी ॥ ६४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
ना ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
का ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
॥ नवमी ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
॥ नवमी ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
॥ नवमी ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
॥ नवमी ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥

॥ मरिचाथपमान् ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
का ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
मा ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
नमो ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
यद् ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥
जय ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥

[illegible]

यनयणी मरुविद्या राज वनराज्यं गीत गय
 लुं ययायुः ॥ ॐ देवलिं ॥ ॐ आवाहः
 नादिया निमूडांदनयन् ॥ ॐ नना गय
 वनं ॥ ॐ देवलिं ॥ ॐ आवाहः
 ६ ॥ ॐ सिंहासनया ॥ ॐ महिषासनया ॥
 ध्यानं ॥ ॐ खड्गवज्रं धनं चक्रं, मंत्रं च नथेव

व । व त र दं ६२ ल या रं य द द्दि ६५ न चि त्रा डि ना ॥
रु द कं य त थ यं ०५ ध न्ने न्ने दौ च या ष कं । ग र्ज नी
दे ल्य क णं च । वि न्द्र म्दा च वा म क ॥ सिं ह म दिः
ष का वू रा । या च ना वू च ६५ हि ना । ध्वा य न य
म हा द षी । नू द च । ली न भा मु न् ॥ ध्वा न य यं
न म ४ ॥ ज यं क लि मू ल म कु न् ॥ नं क र्ज् आ नू

द च ध्वा ये या य ॥ नं क न म ४ णीं डी य लु च षा
ये न म ४ णीं डी या य ५ ॥ ३ ॥ व लि ॥ य द्म म्दा ॥
०० नि नू द च लु य द्म ॥ १ ॥ न्या स ४ ॥ नं क आ ध्वा
नो दि ६ ॥ नं सिं हा स न या य ॥ नं क म दि षा स न या ॥
ध्वा न ॥ नं क र व द्म ण किं णा न च क्कं व द्मं च व त र दं न थ ॥
वि ष लं च न थ या रं द द्म रू ल ष वि श मि ॥ रु द

कंदर्पसंयवे धनुर्नैरावयवकं । नर्तनीदे
त्यकं ननु विन्दुमूडावयवमकं ॥ सिंहमहिष
कावूटा । नृणां रावयवमन्त्रिणा । उर्वरवयवमादः
वीच्येष्टावयवनमासुक्तं ॥ ध्यानपूर्यया ॥ उः
यीजलि ३ ॥ मूलमन्त्रेण ॥ जे ५ ०० ००० पुत्रवृत्तय
वाय ॥ जे ५ नमः ४ ० ० ० ० ॥ वलि ॥ लिखितमूडा ॥

०० लिखितवृत्तय ॥ २ ॥ न्यासः ॥ जे ५ आधामादि
॥ जे ५ सिंहमहिषमनया ॥ जे ५ महिषमनयाय ॥ ध्यान
जे ५ खड्गदण्डनयकं वज्रवत्रलिखितकं । वाः
जनयकनध्यात्वा दक्षदक्षसुविभक्ति ॥ रुद्रक
गुयागधनू नैरावयवमन्त्रेण नीचदेत्यकं ननु
नमूडा वामदक्षवधवायी ॥ सिंहमहिषमा

दूरा. कृष्णवर्णं रूषिणा. नर्वनूय महादवी.
व. (ॐ) ग्रामय नमो भूते ॥ ध्यानपूज्य ॥ ग्या ३२.
लि ३ ॥ मूलमनुदा ॥ नं ३ उं उं च (ॐ) ग्रामय याग.
नं ३ नमः ॥ ३ ॥ वलि ॥ वाकि मूडा ॥ ३ ॥ नि
व. (ॐ) ग्रामय जा ॥ ३ ॥ न्या स ४ ॥ नं ३ आधारादि ॥
नं ३ सिहासनया ॥ नं ३ महिषासनया ॥ ध्यान

नं ३ खड्गं तल कालानु. वाचकं च वडकं. नं ३
क. नं ३ वि. नं ३ य. यागं दक्षिणविशुक्ति ॥ ३ ॥
क. नं ३ नीचाय. नं ३ घ. नं ३ य. वा. नं ३
नं ३ वि. नं ३ मूडा. वा. नं ३ रु. नं ३ वि. नं ३ ॥ सिहास.
नं ३ सि. नं ३ द. नं ३ म. नं ३ सि. नं ३ ॥ ध्यानपूज्य ॥
महादवी. नमो भूते नायिका ॥ ध्यानपूज्य ॥

उया अलि ३ ॥ मूलमकुन ॥ वं ऊ जूं मूं च उ नायि
का ये या य ॥ वं ऊ न म ४ णी डी ॥ २ ॥ व लि ॥ ग
स म डा ॥ वं मि च उ ना यिका य ॥ ४ ॥ ॥
न्या स ४ ॥ वं ऊ आ धा रा दि ॥ वं ऊ सिं हा स न या ॥
वं म हि षा स न या ॥ वं न ॥ वं ऊ ज्ये न व कु रि नि
गा य. यो व नी व ध नू यि नी ए व न या ग न च कुं

वर्ज व प्र लि ष्ट लि नी ॥ या रं द कि ल रु ल य. त र ता
रं का न (४) म हि ता १ रु ट कां क ग ध न र्घ. ग दा र्घ
भ रु न र्ज नी ॥ द ह्य क गं वि न्द म डा वा स रु ल य
वि रु मि ॥ व र्ध नू यं तु सा द वी. व उ अ य च न मा म्कु न
॥ वं न य र्घ ॥ उ या अ लि ३ ॥ मूलमकुन ॥ वं ऊ
वं व रु यो या य. ॥ वं ऊ न म ४ णी डी ॥ २ ॥ व लि

ॐ
कोलमूडा ॥ ॐ निचमुदजा ॥ ५ ॥ न्यास
ॐ आधारादि ८ ॥ ॐ ५ सिंहासमपाय ॥ ॐ महि
यासमया ॥ ध्यान ॥ ॐ ५ स्यामव लुमहादवीः
सिंहमहियममिनी ॥ रवईधजं हारं चकं वः
ऊनदभवच ॥ त्रिहूलं पाण्डुरसूय दक्षिणेन
चक्षत्रिणी ॥ रुठकं पाणी धनूर्यं गदाद्यं अस

गर्जनी ॥ देवकं हां विन्दु मूडा ॥ वामदक्षसूय
त्रिणी ॥ सर्वत्रतामसूयसी चतुर्वर्ती नमो
न ॥ ध्यानं यथा ॥ गुयाऊलि ३ ॥ मूलं ॥ ॐ ५ ॐ ॐ
चतुर्वर्त्ययाय ॥ ॐ ५ नमः ४ हां ५ ॥ ३ ॥ वलि ॥
चतुर्मूडा ॥ ॐ निचमुवनीयजा ॥ ६ ॥ न्यास
४ ॥ ॐ ५ आधारादि ८ ॥ ॐ ५ सिंहासमया ॥ ॐ ५

मदिबासनया ॥ ध्यान ॥ जेंऊ मिहासनमदि
बस्काव लुयीना नृधयुला । खड्गं गदा धर्मः
वज्रं चाक्रुणं वनदेनथा ॥ गिष्ठलं यारुदद
ष. नानालंका मरुविना । रुठकं चक्रधन
सं. घं अयो धं च न ऊनी ॥ देखकृणं विन्दु म
डां. वामरुसुषुविनति । गिनजा सोवनी द

वी. नमस्तु च पुनू यिनी ॥ ध्यान पृथं ॥ मूल
जया ऊलि ३ ॥ जेंऊ उं उं व पुनू या य वा य
॥ जेंऊ नमः ४ ॥ जेंऊ ॥ २ ॥ वलिं ॥ कायमूडा ॥
०० निच पुनू या पूजा ॥ १ ॥ न्यास ४ ॥ जेंऊ
श्रीधारादि ८ ॥ जेंऊ मिहासनया ॥ जेंऊ मदि
बासनया ॥ ध्यान ॥ जेंऊ ज्येष्ठ व पुनू गिनजा

च लुजथाउ हा मंयुन ४ । खड्डु हल हात्रचक
वकुं मंकु हा रु सुक ॥ वरदं पाशु धानीच ददि
॥ अच व विरुति । रु ठ कं देखक हां व धन नमज
व घंठिका ॥ या हात ऊ नी विनु मूडां वारु सु व
विरुति । अवं ध्या स्वा म हा द वी लुजि व ली न मा
मुन ॥ ध्यान वृष ॥ मूलं गुणो अं शि ॥ अं ५ :

ॐ अ ४ अ नि व नि का ये या य ॥ अं ५ नम ४ ॥
ॐ ॥ ३ ॥ व लिं ॥ ख ड्ड मूडा ॥ ४ ॥ अ नि व नि का
यु डा ॥ ८ ॥ त न ४ का र्पा य नी यु ड न ॥ न्या म
४ ॥ अं ५ डी स ॥ १ ॥ अं ५ डी स ॥ १ ॥ अं ५ डी स ॥ १ ॥
नि व स स्वा हा ॥ अं ५ डी स ॥ १ ॥ नि व स स्वा हा ॥ अं ५
अं ५ डी स ॥ १ ॥ अं ५ डी स ॥ १ ॥ अं ५ डी स ॥ १ ॥

वदत ॥ जें ऊं सौं ज्ञा सुहाय रुत ॥ कना झं ना
स ॥ ॥ जें ऊं आधा पादि ॥ जें ऊं सिं हासन वा ॥
जें ऊं मदि बासन वा ॥ ॥ ॥ जें ऊं कात्यायनी म
हादवी रुमस्यामा ॥ रुचिनी । सर्व लंकान
॥ ॥ गव. पीना नर यथा धना ॥ दाला दलि
नमश्च स्तुता ॥ जें ऊं दलि विष्टरु । दाला न

मुजादवी वामददं च धात्रिनी ॥ खड्गं वा शं नथ
॥ किं रिष्टलं वकुददि ॥ रुलं धन्यं कर्ण
या ॥ कं ॥ न वामक कन ॥ सिं हासन समा
रुहा मदि वाम सुयं जिनी ॥ ॥ ॥ रुलं कर्ण वधा
नामि ॥ को ॥ वेष्टा निद्या निनी ॥ ॥ ॥ आयमा ना सः
दादवी सर्व ॥ गुरु कयं कनी ॥ जयाद्यादिव ना

वृक्षः कात्यायनी नमोस्तुते ॥ ध्यानयुक्तं ॥ सु
लनय या ऊरुलि ३ ॥ नं ऊं ऊं डी स ही महा इ
नेत्रानु कात्यायनी या दू ३ ॥ वलि ॥ यानि
मूडा ॥ ॥ नतयत्रिवान दू जन ॥ नं ऊं मू
ऊ या ये या ३ ॥ नं ऊं मू विज या य ॥ नं ऊं
मू अजिगार्य ॥ वू नं ऊं मू अयन जि

गार्य ॥ नं ऊं मू डं रु न्य ॥ नं ऊं मू सं रु न्य
॥ नं ऊं मू मा वू रु न्य ॥ नं ऊं वू मू आ
कष वू ॥ वलि ॥ आ वारु नादिस्व वू स्व मू
हं ॥ वृत्ति कात्यायनी दू जन ॥ ॥ नतय
वधनी दू जा मान रु न ॥ न्या स ४ ॥ नं ऊं ना दू द
या य न म ४ ॥ नं ऊं नौ छि न म स्वा दू ॥ नं ऊं नू

निबन्धेथो बठ ॥ जें अ नें कवदायई ॥ जें अ
नो नगुय या ये वे बठ ॥ जें अ न ॥ अम सुय रु
कना मं न्यास ॥ ॥ जें अ आधारा दि ८ ॥ जें अ मि
लासनया ॥ जें अ महियासनया ॥ ॥ ध्यान ॥ जें अ
उंदन ध्वनी मर्हंदवी. नमामित्रियद्या तनी ॥ अ
दिमी पृथ्वी कासा. दोल नम (ध वि विनयन ॥

सर्वा लंकालं संयुक्ता. हाउ माला वलं विनी
अष्टादश गुणा काना. यीन वदक नूत्रला ॥
खड्ग किं न थावाध. मक १० मक ना निवा
वुजं येव हा प्राकाय. यक १० लं यद कि (रा ॥
रुद्रकं याग १० म १० वी. न १० नी न १० ध १०
उमलं ला १० लं का १० ध १० ध १० ध १० ध १०

सिंहासन गता देवी यथा लीट स्निग्धः
 त्री। मरु मरुि यमा नूटा दद्या यादि नयनि
 णी ॥ ७५ ॥ मरुि यामं वकु मरुि यामं
 य। काध नूया वताली च द्वा ला नू य स्निग्ध
 ह्यत्री ॥ वक्रा यामा नू वं द नू य जनी या म
 रु ह्यत्री ॥ यामा ना सदा इ ग्ना न मा मि स

वंदता ॥ यामा नू य ॥ ७५ ॥ सि मरु
 न ॥ ७५ ॥ मरुि यामं वकु मरुि यामं
 रु व ह्यत्री ॥ ७५ ॥ दद्या या य ॥ ७५ ॥ वलि ॥ ७५
 कि मरुि ॥ ७५ ॥ नू य मि वा नू य जनी ॥ ७५
 नू य मरुि यामा नू य वन द मरुि यामा नू य
 मरुि यामा ॥ ७५ ॥ वं मरुि यामा ॥ ७५ ॥ वं मरुि

